चौबीस-ठाणा-चर्चा।

(गोम्मटसारके अनुसार)

सम्पादक—

ब्रह्मचारी फूलचन्द

प्रति० आश्रम, तुकोगंज, इन्दौर

चतुर्थ संस्करण

वीर नि० सं० २४७३

मूल्य सदुपयोग

प्रकाशक—
ब्रह्मचारी दुलीचन्द
उदासीन आश्रम तुकोगंज, इन्दौर



मुद्रक—
प० राजमल शर्मा 'साहित्यरत्न'
प्रकाश प्रिंटिंग वर्क्स
एम टी क्लाथमार्केट, इन्दोर

भूमिका

ग्रंथ विषयक परिचय

यह ग्रन्थ है सो छोटासा पर उपयोगी बहुत है। क्योंकि इसमें सब जीवों की सर्व अवस्था सहित सुगमता से ज्ञान दान रूप गद्य और पद्य में रचना की गई है। इसलिए इस ग्रन्थ का जितना अधिक प्रचार होगा उतना ही जीवों का विशेष लाभ होगा। इसमें जीवों की क्रम [illegible] से होने वाली शुद्धाशुद्ध सब अवस्थाओं का द्रव्य तथा भावरूप से गति इन्द्रिय काय कषायादि के भेद से २४ दण्डकों [illegible] चर्चाओं में तथा चौबीस [illegible] पाठ प्रथम जैनमें

सिद्धिक (कंठस्थ) ज्ञान करने के लिए गद्य रूप छंदों वध दोहा चौपाई में सर्व साधारण को बड़ी सुगमता से ज्ञान की प्राप्ति हो सके इस प्रकार ग्रंथ करताने इस ग्रंथ की रचना की है।

इस विषय के ज्ञान प्राप्ति के ग्रंथ तो पूर्व ऋषियों के रचे हुए गोमट्ट सारादि अनेक मौजूद हैं किन्तु वे ग्रंथ कठिन और विस्तृत है, इसलिए सर्व साधारण जीवों को उन ग्रंथों के द्वारा जितना लाभ पहुंचना चाहिए उतना नहीं पहुंचता इसलिए ग्रंथ कर्ता ने इस ग्रंथ की रचना संक्षिप्त और सरल रूप में की है।

यह ग्रंथ है तो छोटा पर गोमट्टसारादि बड़े ग्रन्थोंमें प्रवेश कराने को मानो प्रवेशिका तथा कुंजी ही है।

इस ग्रंथ को भली भांति संशोधन कर प्रकाशित किया है तो भी यदि इसमें दृष्टि दोष या प्रमाद वश कोई अशुद्धि रह गई हो तो सज्जन जन हमें सूचित करें और शुद्ध कर पढ़ें।

पाठकगण उचित है कि प्रत्येक विषय, का ध्यान से मनन पूर्वक पढ़ें जिससे परिणामों की विशुद्धि होय और आत्मा का वैभा तथा स्वभाव दसा का भेद ज्ञान का लाभ हो जिससे ग्रंथ कर्त्ता व प्रकाशक का परिश्रम सफल हो।

भवदीय—प्रकाशक—

दातारों के नाम—

प्रति संख्या

१०० श्री धूत भूपिता पतासीबाईजी—गया

१०० श्री मातेश्वरी शिखरचन्दजीपाटणी,गया

१०० श्री तजकुमारीबाईजी विनोद मिस्स, उज्जन ने श्री रायबहादुर वाणिज्य भूषण ताजिर उलमुल्क स्वर्गीय सेठ माणिकचन्दजी साहिब सेठी की पुण्य स्मृति में।

१०० श्री रतनबाईजी धर्मपत्नी माणिकचन्दजी पाटणी (फर्म फतचन्दजी मूलचन्दजी) इन्दौर

१०० श्री लाडकबाईजी धर्मपत्नी श्री स्व सेठ धन्नीलालजी मलकापुर (नगर)

॥ ॐनम सिद्धेभ्य ॥

चौबीस-ठाणा-चर्चा ।

गाथा ।

गइ इंदिये च काये,
जोये-वेय-कसाय-णाणं य ।
संजम दंसण-लेस्सा-
भविया समत्त-सण्णि-आहार ॥१॥
गुण-जीवा-पज्जत्ती
पाणा सण्णा य-मग्गणा ओय ।
उवओगाविय कमसो
वीसतु परूवणा भणिया ॥२॥
णाणाणि य पक्षाणि य
जाद य कुल्कोटि-मणुया सव्वे ।
गण्हानि येण भणिया,
कमेण चउवीस ठाणाणि ॥३॥

चौवीस ठाणाके नाम

१ गति	१३ संज्ञी
२ इन्द्रिय	१४ आहारक
३ काय	१५ गुणस्थान
४ योग	१६ जीवसमास
५ वेद	१७ पर्याप्ति
६ कषाय	१८ प्राण
७ ज्ञान	१९ संज्ञा
८ संयम	२० उपयोग
९ दर्शन	२१ ध्यान
१० लेश्या	२२ आस्रव
११ भव्य	२३ जाति
१२ सम्यक्त्व	२४ कुल

गति ४
१ नरकगति
२ तिर्यंचगति
३ देवगति
४ मनुष्यगति

इंद्रिय ५
१ एक-इंद्रिय
२ दो-इंद्रिय
३ तीन-इंद्रिय
४ चार-इंद्रिय
५ पाच-इंद्रिय

काय ६
१ पृथ्वीकाय
२ जयकाय
३ अग्निकाय
४ वायुकाय
५ वनस्पतिकाय
६ त्रसकाय

योग १५

मनयोग ४
१ सत्यमनोयोग
२ असत्यमनोयोग
३ उभयमनोयोग
४ अनुभयमनोयोग

वचनयोग ४
१ सत्यवचनयोग
२ असत्यवचनयोग

३ उभयवचनयोग
४ अनुभयवचनयोग

काययोग ७

१ ओदारिककाय
२ आदारिक मिश्र
३ वैक्रियक काय
४ वैक्रियक मिश्र
५ आहारक काय
६ आहारक मिश्र
७ कार्माण काय

वेद ३

१ स्त्री-वेद
२ पुरुष-वेद
३ नपुसक-वेद

कषाय २५

अनन्तानुबंधी ४

१ क्रोध
२ मान
३ माया
४ लोभ

अप्रत्याख्यान ४

१ क्रोध
२ मान
३ माया
४ लोभ

प्रत्याख्यान ४	३ अरति
१ क्रोध	४ शोक
२ मान	५ भय
३ माया	६ जुगुप्सा
४ लोभ	७ स्त्री-वेद
संज्वलन ४	८ पुरुष-वेद
१ क्रोध	९ नपुंसक-वेद
२ मान	ज्ञान ८
३ माया	१ कुमतिज्ञान
४ लोभ	२ कुश्रुतिज्ञान
अकषाय ९	३ कुअवधिज्ञान
१ हास्य	४ सुमतिज्ञान
२ रति	५ सुश्रुतिज्ञान

६ सुश्रुतविज्ञान
७ मन पर्ययज्ञान
८ केवलज्ञान

संयम ७

१ असंयम
२ संयमासंयम
३ सामायिक
४ छेदोपस्थापन
५ परिहारविशुद्धि
६ सूक्ष्मसापराय
७ यथाख्यात

दर्शन ४

चक्षुदर्शन

२ अचक्षुदर्शन
३ अवधिदर्शन
४ केवलदर्शन

लेश्या ६

१ कृष्ण-लेश्या
२ नील ,,
३ कापोत ,,
४ पीत ,,
५ पद्म ,,
६ शुक्ल ,,

भव्य २

१ भव्य, २ अभव्य

सम्यक्त्व ६

१ मिथ्यात्व-सम्य

२ सासादन सम्य	४ अव्रत
३ मिश्र ,,	५ अणुव्रत
४ उपशम ,,	६ प्रमत्त
५ वेदक ,,	७ अप्रमत्त
६ क्षायिक ,,	८ अपूर्वकरण
सैनी २	९ अनिवृत्तिकरण
१ सैनी, २ असैनी	१० सूक्ष्मसापराय
आहारक २	११ उपशांतमोह
१ आहारक, २अनाहार	१२ क्षीणमोह
गुणस्थान १४	१३ सयोगकेवली
१ मिथ्यात्व	१४ अयोगकेवली
२ सासादन	जीवसमास १९
३ मिश्र	२पृथ्वीकायसूक्ष्म, वादर

२ जलकायसूक्ष्म, बादर	पर्याप्ति ६
२ अग्निकाय ,, ,,	१ आहार
२ वायुकाय ,, ,,	२ शरीर
२ नित्यनिगो ,, ,,	३ इंद्रिय
२ इतरनिगोद ,, ,,	४ श्वासोच्छास
१ सप्रतिष्ठित प्रत्येक	५ भाषा
१ अप्रतिष्ठित ,,	६ मन
१ दो-इंद्रिय-जीव वा	प्राण १०
१ तीन ,, ,, ,,	५ इंद्रिय-प्राण
१ चार ,, ,, ,,	१ मनोबल
१ सैनी-पचें ,,	१ वचनबल
१ असैनी ,, ,, ,,	१ कायबल
	१ श्वासोच्छ्वास प्राण
	१ आयु-प्राण

सज्ञा ४

१ आहार संज्ञा
२ भय ,,
३ मैथुन ,,
४ परिग्रह ,,

उपयोग १२

८ ज्ञानोपयोग
४ दर्शनोपयोग

ध्यान १६

आर्तध्यान ४

१ इष्टवियोग
२ अनिष्टसयोग
३ पीडाचिंतन
४ निदानबंध

रौद्रध्यान ४

१ हिंसानंद
२ मृषानंद
३ चौर्यानंद
४ परिग्रहानंद

धर्मध्यान ४

१ आज्ञाविचय
२ अपायविचय
३ विपाकविचय
४ संस्थानविचय

शुक्लध्यान ४

१ पृथक्त्ववितर्क
२ [illegible]

चौवीस ठाणाके उत्तर भेद

३ सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति
४ व्युपरतक्रियानिवृत्ति

आस्रव ५७

मिथ्यात्व ५

१ एकांतमिथ्यात्व
२ विनयमिथ्यात्व
३ विपरीत ,,
४ संशय ,,
५ अज्ञान ,,

अव्रत १२

६ षट्काय रक्षा नहीं
५ इंद्रिय वश नाहीं
१ मन वश नहीं

कषाय २५ पूर्वोक्त

योग १५ पूर्वोक्त

जाति ८४ लक्ष

७ लाख पृथ्वीकाय
७ ,, जलकाय
७ ,, अग्निकाय
७ ,, वायुकाय
७ ,, नित्य निगोद
७ ,, इतर निगोद
१० ,, वनस्पति
२ ,, दो-इन्द्रिय
२ ,, तीन-इन्द्रिय
२ ,, चार इंद्रिय
२ ,, पचेंद्रि तिर्यंच

४ ,, नारक
४ ,, देव
१४ ,, मनुष्य
कुल १९९॥ ल को
२२ लाखकोटिपृथ्वीकाय
७ ,, जलकाय
३ ,, अग्निकाय
७ ,, वायुकाय
२८ ,, वनस्पतिकाय
७ ,, दोइन्द्रिय

८ लाख तीन इन्द्रिय
९ ,, चार-इन्द्रिय
४३॥,, पचेंद्रिय तिर्यंच
१२॥ लाख जलचर
१९ ,, थलचर
१२ ,, नभचर
२५ लाख नारक
२६ ,, देव
१४ ,, मनुष्य

१ गति	नरक
१ इंद्रिय	पचेंद्रिय
१ काय	त्रस (कार्माण १
११ योग	मन ४, वच ४, वैक्रि २
१ वेद	नपुसक
२३ कषाय	स्त्री पुरुषवेद विना
६ ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१ सयम	असयम
३ दर्शन	केवलदर्शन विना
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्यक्त्व- सव	

१ सैनी	सैनी
२ आहारक	अनाहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान	१।२।३।४ पर्यंत
१ जीवसमास	पचेंद्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ सज्ञा	सब
९ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
९ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म १
५१ आस्रव	स्त्री १, पु १, औ २, आ
४ लक्षजानि	नरक सबंधी
२५ ल०को०कुल	" "

१	गति	तिर्यच
५	इंद्रिय	सब
६	काय	,,
११	योग	मन४, वच४ औदा २ [कामा १
३	वेद	सब
२५	कषाय	,,
६	ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
२	संयम	असंयम, देशसंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन विना
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२	सैनी	सैनी, असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
५	गुणस्थान	१।२।३।४।५ पर्यंत
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
९	उपयोग	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३ [दर्शन३
११	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म ३
५३	आस्रव	आहा २ वैक्रि २ विना
६२	लक्ष जाति	तिर्यंच } एकेंद्रीसे
१३४॥	लक्ष को कुल	,, } पचेंद्री पर्यंत

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१३	योग	वैक्रियक द्विक विना
३	वेद	सब
२५	कषाय	,,
८	ज्ञान	,,
७	सयम	,,
४	दर्शन	,,
६	लेश्या	,,
२	भव्य	भव्य अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

१ सैनी	सैनी
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१४ गुणस्थान	सब
१ जीवसमास	पचद्री सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	सब
१६ ध्यान	सब
५५ आस्रव	वैक्रियक द्विक विना
१४ लक्षजाति	मनुष्य सम्बन्धी
१४ लक्षकोटिकुल	मनुष्य सम्बन्धी

देवगतिमें–

१	गति	देव
१	इंद्रिय	पंचेंद्रि
१	काय	त्रस (कर्माण १
११	योग	म ४, व ४, वैक्रि २,
२	वेद	स्त्री-पुरुष-वेद
२४	कषाय	नपुंसक-वेद विना
६	ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवल-दर्शन विना
३	लेश्या	पी प शु । पर्याप्त अपेक्षा
६	,,	सब । अपर्याप्त अपेक्षा
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

१	सेनी	सैना
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	१।२।३।४ पयन
१	जीवसमास	पचेंद्री सेनी
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब (दर्शन ३ ।
०	उपयोग	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३,
१०	ध्यान	आर्त ४, रुद्र ४, धर्म २ ।
५२	आस्रव	नपु, औदा २, आहा २ विना
४	लक्षजाति	देव सम्बन्धी
२६	ल०को०कुल	" "

१	गति	तिर्यच
१	इंद्रिय	एक-इंद्रिय, स्पर्शन
५	काय	त्रस विना । [कार्माण ।
३	योग	औ का , औ मिश्र
१	वेद	नपुंसक
२३	कषाय	स्त्री पुरुष-वेद विना
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुति
१	संयम	असंयम
१	दर्शन	अचक्षु
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत ।
२	भव्य	भव्य, अभव्य, ।
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व ।

१	सैनी	असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१४	जीवसमास	एकेंद्री सम्बन्धी
४	पर्याप्ति	भाषा, मन विना
४	प्राण	स्पर्शन, काय, आयु, श्वास
४	सज्ञा	सब
३	उपयोग	कुज्ञान २अचक्षुद १
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
३८	आस्रव	मि ५अ ७क २३यो ३
५२	लक्षजाति	एकेंद्री सम्बन्धी
६७	ल०को० कुल	एकेंद्री सम्बन्धी।

दो-इन्द्रियमें-

१	गति	तिर्यंच
१	इन्द्रिय	बेइन्द्रिय
१	काय	त्रस
४	योग	औदा २, अनु व, का
१	वेद	नपुसक
२३	कषाय	स्त्री पुरुष वेद विना।
१	संयम	असंयम
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुति
१	दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२	भव्य	भव्य, अभव्य
१	सम्यक्त्व-	मिथ्यात्व

१ सैनी असनी
२ आहारक आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान मिथ्यात्व
१ जीवसमास दो इंद्रिय
५ पर्याप्ति मन बिना
६ प्राण इंद्रिय २, काय, वचन,
४ सज्ञा सन। [श्वास, आयु।
३ उपयोग कुज्ञान २, अचक्षुदर्शन
८ ध्यान आर्त ४, रौद्र ४
४० आस्रव मि ५ अ ८ क २३ यो
२ लक्षजाति दो-इं
७ ल को कुल-दो

१	गति	तियच
१	इन्द्रिय	तीन–इन्द्रिय
१	काय	त्रस
४	योग	औ २, वच १, का १
१	वेद	नपुंसक
२३	कषाय	स्त्री–पुरुष–वेद विना
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुति
१	संयम	असंयम
१	दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२	भव्य	भव्य, अभव्य
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व

१	संज्ञी	असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१	जीवसमास	तीन-इंद्रिय
५	पर्याप्ति	मन बिना
७	प्राण	इंद्रि ३,काय १, वचन १
४	संज्ञा	सन (श्वास १, आयु १
३	उपयोग	कुज्ञान २, अचक्षुदर्शन
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४१	आस्रव	मि ५ अ ९ क. २३ योग ४
२	लक्षजाति	तीन-इंद्रिय सम्बंधी
८	कु. को	कुल-तीन-इंद्रिय स

१	गति	तिर्यच
१	इंद्रिय	चार-इंद्रिय
१	काय	त्रस (कायाग १
४	योग	आ २, अनुभयवच १,
१	वेद	नपुंसक
२३	कषाय	स्त्री-पुरुष-वेद विना।
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुति
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत।
२	भव्य	भव्य, अभव्य
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व

४	गति	सब
१	इंद्रिय	पंचेंद्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२	सैनी	सब
२	आहारक	सब
१४	गुणस्थान	सब
२	जविसमास	सैनी, असैनी-पचेंद्रिय
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१२	उपयोग	सब
१६	ध्यान	सब
५७	आस्रव	सब
२६	लक्ष जाति	पचेंद्रिय
१०८॥	ल० को० कुल	पचेंद्रिय

त्रसकायमे-

४	गति	दे० म० ति० ना०
४	इन्द्री	एकेंद्रिय विना
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	स्त्री, पुरुष, नपुंसक
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२ सैनी सनी, असैनी
२ आहारक आहारक, अनाहारक
१४ गुणस्थान सब
७ जीवसमास त्रस सम्बन्धी
६ पर्याप्ति सब
१० प्राण सब
४ सज्ञा सब
१२ उपयोग ज्ञान ८, दर्शन ४
१६ ध्यान सब
५७ आस्रव सब
२२ लक्ष जाति त्रस सब
१३२॥ लक्षकोटि कुल त्रस सब

३२ सत्य व अनुभय मन वचनयोगमें

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१	योग	स्वकीय
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

नोट—अनुभय वचन योग में यह विशेषता है कि विकल चतुष्क में भी पाया जाता है।

१ सैनी सैनी
१ आहारक आहारक
१२ गुणस्थान अयोग विना
१ जीवसमास पचें० सैनी
६ पर्याप्ति सब
१० प्राण सब
४ संज्ञा सब
१२ उपयोग सब
१५ ध्यान सूक्ष्मक्रियानि० विना
५२ आस्रव मि-अ१२उ२५यो१
० स्पजाति पचेंद्री सब (मर्त्य)
२१०८॥ लक्षकोटिकुल पचेंद्री सर्व

३४ सत्य व उभय मनवचनयोग में

८ गति	सब
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१ काय	त्रस
१ योग	स्वकाय
३ वेद	सब
२० कपाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७ संयम	सब
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सर्व
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्यक्त्व	सब

७/ स्थान।

१	सन्नी	सन्नी
१	आहारक	आहारक
१२	गुणस्थान	[illegible] [illegible] बिना
२	जीवसमास	सन्नी, पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१४	ध्यान	[illegible] २ शुक्ल बिना
४३	आस्रव	[illegible]
२६	लक्ष जाति	पचेंद्री सब
१०८॥	ल० को० कुल	पचेंद्री सर्व

३६ औदारिककाययोगमें—

२ गति	तिर्यच, मनुष्य
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	औदारिक
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्यक्त्व	सब

२	सैनी	मना, असैनी
१	आहारक	आहारक
१३	गुणस्थान	अयाग विना
१०	जीवसमास	सव
६	पर्याप्ति	सव
१०	प्राण	सव
४	संज्ञा	सव
१२	उपयोग	सव
१५	ध्यान	व्युपरतक्रियानिवृत्ति विना
४२	आस्रव	मि॰ अ१२ व२५ यो ?
७०	लक्ष जाति	तिर्यच, मनुष्य

१४८॥ लक्षकोटि कुल तिर्यच,

३८ औदारिकमिश्रकाययोगमें–

२	गति	तिर्यंच, मनुष्य
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१	योग	स्व (औदारिक मिश्र)
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	विभंग, मन पर्यय विना
२	संयम	असंयम, यथाख्यात
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	द्रव्यकापोत, भाव ६।
२	भव्य	भव्य, अभव्य
४	सम्यक्त्व	उपशम, मिश्र विना

२	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
२	आहारक	आहारक, (समुद्घात अपेक्षा) अनाहारक।
४	गुणस्थान	१।२।४।१३
१०	जीवसमास	[illegible]
६	पर्याप्ति	[illegible]
७	प्राण	[illegible]

२	गति	देव, नारक
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१	योग	स्व (रतियर)
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवल बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य ।
६	सम्यक्त्व	सब

१	सैनी	सैना
१	आहारक	आहारक
४	गुणस्थान	१।२।३।४
१	जीवसमास	पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
९	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म २।
४३	आस्रव	मि ५ अ १२, क२५ यो १
८	लक्षजाति	देव नारकी
५१	ल०को०कुल	” ”

वैक्रियकमिश्रकाययोगमें

२ गति	देव, नारक
१ इंद्रिय	पंचेंद्री
१ काय	त्रस
१ योग	वैक्रियकमिश्र
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
५ ज्ञान	सुज्ञान आदिके ३, कुज्ञान
१ संयम	असंयम [आदिके २
३ दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
६ लेश्या	द्रव्यकापोत, भाव ६।
२ भव्य	भव्य, अभव्य
५ सम्यक्त्व	मिश्र विना

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
३	गुणस्थान	१।२।४
१	जीवसमास	पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
७	प्राण	मन, वच, स्वास विना।
४	सज्ञा	सर्व
८	उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन ३।
०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म १
४३	आस्रव	मि ५ अ १२ क २५ जै. १
८	लक्षजाति	देव, नारकी
५१	ल को कुल ,,	,,

१४ आहारक वा मिश्रकायवोगम

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पचेन्द्रि
१ काय	त्रस
१ योग	स्वस्वयोग
१ वेद	पुरुष
११ कषाय	स० ४, हास्य ६, वेद १
३ ज्ञान	मति, श्रुति, अवधि।
२ संयम	सामयिक, छदोपस्था
३ दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि।
३ लेश्या	पात, पद्म, शुक्र।
१ भव्य	भव्य
२ सम्यक्त्व-	क्षायिक, वेदक।

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	प्रमत्त
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	स्वकीय
४	संज्ञा	सर्व
६	उपयोग	३ ज्ञान, ३ दर्शन
७	ध्यान	आर्त ३, धर्म ४
१२	आस्रव	कषा. ११ योग १ स नप
१४	लक्षजोनि	मनुष्य
१४	ल०को० कुल	

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१	योग	सब [कार्माण योग]
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	कुअवधि, मनःपर्ययबिना
२	संयम	असंयम, यथाख्यात
४	दर्शन	सब
१	लेश्या	द्रव्यशुक्ल, भाव ६
२	भव्य	भव्य, अभव्य
५	सम्यक्त्व	मिश्र बिना

२	संनी	सैनी, असैनी
१	आहारक	अनाहारक,
४	गुणस्थान	१।२।४।१३
१०	जीवसमास	सब
०	पर्याप्ति	०
७	प्राण	मन, वच, स्वास, विना
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४।
११	ध्यान	आ ४, रौद्र ४ ध २ शु १
४३	आस्रव	मि. ५ । १२ अ. २५ यो १
८४	लक्षजाति	सब

१००॥ ल कों कुल सब

३	गति	देव, मनुष्य, तिर्यच
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१३	योग	आहारक द्विक विना
१	वेद	स्त्रीवेद
२३	कषाय	पुरुष, नपुसक विना
६	ज्ञान	सुज्ञान३, कुज्ञान३
४	सजम	अ दे सामा छेदोप
३	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२	सैनी	सैनी, असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
०	गुणस्थान	आदि के
२	जीवसमास	सैनीपचेंद्री, असैनीपचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
९	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३।
१३	ध्यान	अंतके ३ विना
५३	आस्रव	मि ५ अ १२ क. २२ यो १३
२२	लक्षजाति	देव, मनुष्य, तिर्यंच
८३॥	ल को कुल ,,	

३	गति	देव, मनुष्य, तिर्यच
१	इन्द्रिय	पचेन्द्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
१	वेद	पुरुष
२३	कषाय	स्त्री, नपुंसक विना
७	ज्ञान	केवल विना
५	संयम	सूक्ष्मसा० यथा० विना
३	दर्शन	सब
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२	संज्ञी	सज्ञी, असज्ञी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
बीकानेर ग्रन्थ नं० विभाग	गन	आदि के
	समास	से पचक्षा, जम पच
	ध	सब
		सब
		सब
	ग	केवलज्ञा २ विना
१२	ध्यान	अंतके ३ विना
५५	आस्रव	स्त्री, नपुंसक विना
२२	लक्षजाति	देव, मनुष्य, तिर्यंच
८२॥	ल०को०कुल	,, ,, ,,

३	गति	नरक, पशु, मनुष्य
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
१	वेद	नपुंसक
२३	कषाय	स्त्री, पुरुषवेद बिना
६	ज्ञान	मन पर्यय, केवल बिना
४	संयम	अ, दे, सामा, छेदोप
३	दर्शन	केवल बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य ।
६	सम्यक्त्व	सब

२	सैनी	सैनी, असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
०	गुणस्थान	आदिके
१०	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
०	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१३	ध्यान	अंतके ३ बिना
५३	आस्रव	आहारक द्विक, स्त्रीवेद, पुरुषवेद बिना।
८०	लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य
१७३॥	लक्षकोटि कुल	,, ,, ,,

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब (कषाय१
१० कषाय	हास्यादि ९, स्व ख
२ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्य	भव्य, अभव्य
२ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन

२ संज्ञी	सनी, असनी
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
२ गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१० जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३ दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४ रौद्र ४
४० आस्रव	[illegible]
८० लक्षजाति	सब
१००॥ल को कुलक्रम	

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पचेंद्री
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक२ विना
३ वेद	सब (कषाय१
१० कषाय	हास्यादि ९, स्वस-
३ ज्ञान	मति, श्रुति, अवधि।
१ सयम	असयम
३ दर्शन	केवल विना
६ लेश्या	सब
२ भव्य	भव्य, अभव्य
४ सम्यक्त्व	मिश्र, उपशम, क्षायिक, वे

१	सैनी	सैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
२	गुणस्थान	१।४
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१०	ध्यान	आ० ४, रौ० ४, धर्म ०२
३५	आस्रव	अ १२ क १० योग १३
२६	लक्षजाति	दे ४, ना ४, प ४, म १४
१०८॥	लक्षकोटिकुल	देव, ना, पशु, मनु

२	गति	मनुष्य, पशु
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	मन ४, वचन ४, औ १
३	वेद	सब
१०	कषाय	हास्यादि ९, स्व १
३	ज्ञान	मति, श्रुति, अवधि ।
१	सयम	सयमासयम ।
३	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल ।
१	भव्य	भव्य,
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक ।

१	सैनी	सर्नी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	देशव्रत
१	जीवसमास	सनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
११	ध्यान	आ ४, रौ ४ धर्म ३
३०	आस्रव	अ ११ क १० यो ९
१८	लक्षजाति	मनुष्य, पशु
१४	ल०कौ० कुल	„ „

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेन्द्री
१	काय	त्रस
११	योग	म ४, व ४, औदा १ आहार२
३।०	वेद	सर्व या वेदरहित।
१०	कषाय	सज्वलन ०, सूक्ष्मलोभ १
४	ज्ञान	केवल विना
४	सयम	सामा, छेदो, परिहार, सूक्ष्मसापराय।
३	दर्शन	केवल विना
३	लेश्या	शुभ
१	भव्य	भव्य

३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
८	गुणस्थान	४ से १० तक
१	जीवसमास	पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
८	ध्यान	आर्त ३, धर्म ४, शु १
२१	आस्रव	योग ११, कषाय १०
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुल	,,

४	गति	सब
५	इंद्रिय	सब
६	काय	सब
१५	योग	सब
३	वेद	सब (हास्यादि ख?
२०	कषाय	क्रोधादि १६, वेद ३ विना
७	ज्ञान	केवल विना
५	सयम	सूक्ष्म, यथाख्यात–
३	दर्शन	केवल विना
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२	सैनी	सैनी, असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
८	गुणस्थान	आठ पर्यंत
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३।
१३	ध्यान	आ ४, रौ ४, ध ४, शु १,
५२	आस्रव	मि ५ अ १२ क २० यो १५
८४	लक्षजाति	सब
१९९॥	ल को कुल-,,	

नोट—वेद कषाय के २४ स्थान इसलिये यहां दुबारा नहीं लिखे।

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
१	ज्ञान	स्व स्व
१	संयम	असंयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
२	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन

२ सैनी	सैना, असैना
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
२ गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१० जीवसमास	सब
३ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	ज्ञान खम्ब १, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५५ आस्रव	आहारक २ विना
८४ लक्ष जाति	सब
१००॥लक्षकोटि कुल „	

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१०	योग	म ४, व ४, औ १, वै १
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
१	ज्ञान	कुअवधि।
१	सयम	असयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
२	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन

१	सैनी	सेना
१	आहारक	आहारक
२	गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१	जीवसमास	सैना पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
३	उपयोग	ज्ञान १, दर्शन २
८	ध्यान	आ० ४, रौ० ४
४२	आस्रव	मि ५, अ १२ क २५, योग १०
२६	लक्षजाति	पचेंद्री सब
१०८॥	लक्षकोटिकुल	” ”

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनंतानुबंधी ४ विना
१	ज्ञान	स्व (मति, श्रुति)
७	संयम	सब
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

अवधिज्ञानमें-

४	गति	सव
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सव
३	वेद	सव
२१	कषाय	अनतानुवधी ४ विना
१	ज्ञान	अवधिज्ञान
७	सयम	सव
३	दर्शन	केवल विना
६	लेश्या	सव
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक।

मन पर्ययज्ञानमें–

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म४, व४, औदा १
१	वेद	पुरुष
११	कषाय	सज्व ४, हास्या ६, पुर १
१	ज्ञान	मन पर्यय
४	सयम	सा ३ सू यथा
३	दर्शन	केवल विना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
२	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

केवलज्ञानमें–

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
७	योग	म २, व २, औदा २ आहा१
०	वेद	०
०	कषाय	०
१	ज्ञान	केवलज्ञान
१	संयम	यथाख्यात
१	दर्शन	केवलदर्शन
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	क्षायिक

०	सैनी	०
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
२	गुणस्थान	सयोग, अयोग
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
४	प्राण	मन वच श्वास आयु
०	सज्ञा	०
२	उपयोग	के ज्ञा १, के द १
२	ध्यान	अंतमे शुक्ल २
७	आस्रव	योग
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	„

७८ सामायिक-छेदोपस्थापनसंयम—

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१	काय	त्रस
११	योग	म ४, व ४, औ १ आहा २
३	वेद	सब
१३	कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
१	संयम	स्वस्व (सामा छेदोप)
३	दर्शन	केवलद विना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१	सैनी	सना,
१	आहारक	आहारक
४	गुणस्थान	६।७।८।९
१	जीवसमास	सै पचेन्द्री
६	पर्याप्ति	सव
१०	प्राण	सव
४	संज्ञा	सव
७	उपयोग	ज्ञा ४ दर्शन ३
८	ध्यान	आ ३ ध ४ शुक्ल १
२४	आस्रव	क १३, योग ११
१८	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल०को०कुल	„

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म ४, व ४, आ १
१	वेद	पुरुष
११	कषाय	सज्व ४ हास्यादि ६, पुरुष१
३	ज्ञान	मत्यादि
१	सयम	परिहारविशुद्धि
३	दर्शन	केवल विना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल।
१	भव्य	भव्य
२	सम्यक्त्व–	क्षायिक, वेदक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
२	गुणस्थान	प्रमत्त, अप्रमत्त
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
७	ध्यान	आर्त ३, धर्म ४
२०	आस्रव	क० ११, योग ९
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुल	,,

सूक्ष्मसांपरायसंयममें–

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पंचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म४, व४, औदा १
०	वेद	०
१	कषाय	संज्वलन लोभ
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
१	संयम	सूक्ष्मसांपराय
३	दर्शन	केवलद विना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	भव्य
२	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	१० वा
१	जीवसमास	सैनी, पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
१	संज्ञा	परिग्रह
८	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	प्रथम शुक्ल
१०	आस्रव	सज्वलन क १ योग ९
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुल	,,

यथाख्यातसंयममें-

१	गति	मनुष्य
१	इंद्रिय	पंचेंद्री
१	काय	त्रस
११	योग	म ४, व ४, आ २ का १
०	वेद	०
०	कषाय	०
५	ज्ञान	मत्यादि यथायोग्य
१	संयम	यथाख्यात
४	दर्शन	सब
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	भव्य
२	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	११।१२।१३।१४
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
०	सज्ञा	०
९	उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन ४
४	ध्यान	शु ४
११	आस्त्रव	योग ११
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल० को० कुल	„

२	गति	पशु, मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म ४, व ४, औ १
३	वेद	सब
१७	कषाय	प्रत्या ४, स ४, हा ९
३	ज्ञान	मति, श्रुति, अवधि
१	सयम	सयमासयम
३	दर्शन	केवलद विना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	देशव्रत
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
६	उपयोग	[illegible]
११	ध्यान	[illegible]
३७	आस्रव	[illegible]
१८	लक्षजाति	[illegible]

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	सब
६	काय	सब
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
६	ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१	सयम	असयम
३	दर्शन	केवलदर्शन बिना
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२ संनी
२ आहारक
४ गुणस्थान
१० जीवसमास
६ पर्याप्ति
१० प्राण
४ संज्ञा
० उपयोग
१० ध्यान
५५ आस्रव
८४ लक्ष जाति

२० चक्षुदर्शनमें–

४	गति	सब
२	इंद्रिय	चौइंद्री, पंचेंद्री
१	काय	त्रस
१०	योग	सर्व
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
७	ज्ञान	केवलज्ञान विना
७	संयम	सब
१	दर्शन	चक्षुदर्शन
६	लेश्या	सब
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२	सैनी	सैनी, असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१२	गुणस्थान	१२ पर्यंत
३	जीवसमास	चौइ १, असैं २, पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
८	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन १
१४	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म ४, शु० २
५७	आस्रव	सर्व
२८	लक्ष जाति	चौइंद्री, पचेंद्री
११७॥	ल०को० कुल	

४ गति	सब
५ इंद्रिय	सब
६ काय	सब
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान विना
७ संयम	सब
१ दर्शन	अचक्षुदर्शन
६ लेश्या	सब
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्यक्त्व	सब

२	सैनी	सैनी, असैनी
२	आहारक	आहारक१, अनाहारक१
१२	गुणस्थान	१२ पर्यंत
१०	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
८	उपयोग	ज्ञान ७ दर्शन १
१४	ध्यान	आ ४ ध ४ शुक्ल २ ध ४
५७	आस्रव	सब
८४	लक्षजाति	सब
१९९॥	ल०को०कुल	„

४ गति	सब
१ इंद्रिय	पचेंद्री
१ काय	त्रस
१८ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कपाय	अनंता ४ बिना
४ ज्ञान	सुज्ञान
७ सयम	सब
१ दर्शन	अवधि दर्शन
६ लेश्या	सब
१ भव्य	भव्य
३ सम्यक्त्व	क्षायिक, उपशम, वेदक

१	संनी	सनी,
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
०	गुणस्थान	४ से १२तक
१	जीवसमास	सनी, पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
८	सज्ञा	सब
५	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन १।
१४	ध्यान	अंतरं २, शुक्ल बिना
४८	आश्रव	मि५, क४, अ बिना
२६	लक्षजाति	मनु दे तिं (से प)
१०८॥	ल को कुल	„ „ „ „

०८ कृष्ण, नील, कापोत लेश्यामे—

३	गति	देव बिना (पर्याप्त अपेक्षा)
५	इन्द्रिय	सव
६	काय	सव
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सव
२५	कषाय	,,
६	ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवलद बिना
१	लेश्या	स्व (कृष्ण,नील,कापो)
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सव

२ सैनी सनी, असैना
२ आहारक आहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान १।२।३।४
१० जीवसमास सव
६ पर्याप्ति सव
१० प्राण सव
४ सज्ञा सव
९ उपयोग नान ६, दर्शन ३
१० ध्यान आर्त ४, रौद्र ४, धम २
५५ आस्रव आहारक २ विना
८० लक्षजाति देव विना
१९३॥ ल०को०कुल ,, ,,

३	गति	देव, मनुष्य, पशु
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	,,
२०	कषाय	,,
७	ज्ञान	केवल विना
६	सयम	सूक्ष्मसां, यथाख्यात विना
३	दर्शन	केवल विना
१	लेश्या	स्व (पीत, पद्म)
२	भव्य	भव्य, अभव्य
		सब

२।१	संज्ञी	पहिमें संज्ञी, अमेना दोना, पछमें स १
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
७	गुणस्थान	७ पर्यंत
२।१	जीवसमास	पहिमें से ७ ?? पछमें से १
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१२	ध्यान	आ० ४, रौ० ४, धर्म ४
५७	आस्रव	सब
२२	लक्षजाति	देव, पशु, मनुष्य
८३॥	लक्षकोटिकुल	„ „ „

शुक्ल लेश्यामें–

३ गति	दे म प
१ इन्द्रिय	पचेंद्री
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
१ लेश्या	शुक्ल
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्यक्त्व	सब

१ सैनी	सैनी
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१३ गुणस्थान	१३ पयन
१ जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ सज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	अंतका शुक्र १ विना
५७ आस्रव	सब
२२ लक्षजाति	दे म पशु
८३॥ ल०को० कुल	दे म पशु

४	गति	मत्र
५	इन्द्रिय	सत्र
६	काय	मत्र
१५	योग	सत्र
३	वेद	सत्र
२५	कषाय	सत्र
८	ज्ञान	सत्र
७	संयम	सत्र
४	दर्शन	सत्र
६	लेश्या	सत्र
१	भव्य	भव्य
६	सम्यक्त्व	सत्र

२	सैनी	मत्र
२	आहारक	,,
१४	गुणस्थान	,,
१०	जीवसमास	,,
६	पर्याप्ति	,,
१०	प्राण	,,
४	सज्ञा	,,
१२	उपयोग	,,
१६	ध्यान	,,
५७	आस्रव	,,
८४	लक्षजाति	,,
१००॥	[illegible]	,,

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	"
६ काय	"
१३ योग	आहारक २ विना
३ वेद	सब
२५ कषाय	"
३ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्य	अभव्य
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व

२	सैनी	सब
२	आहारक	सब
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
९	उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५५	आस्रव	आहारक २ बिना
८४	लक्षजाति	सब
१००॥	कुल	सब

४ गति	सब
५ इंद्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्य	भव्य, अभव्य
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व

२	संनी	सैनी, असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
	संज्ञा	सब
५	उपयोग	ज्ञान३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४,
५५	आस्रव	आहारक २ बिना
८४	लक्ष जाति	सब
१९९॥	ल०को० कुल	,,

११० सासदन सम्यक्त्वमें–

४ गति	सब
१ इंद्रिय	पचेंद्री
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक २ विना
३ वेद	सब
२५ कषाय	"
३ ज्ञान	कुज्ञान
१ सयम	असयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्य	भव्य
१ सम्यक्त्व	सासादन

१	सैनी	सैनी,
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	सासादन
१	जीवसमास	सैनी, पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
५	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन २।
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५०	आस्रव	मिथ्या ५, आर्त २ बिना
२६	लक्षजाति	मनु देव नारकी पशु
१०८॥	ल को कुल-	,, ,, ,, पचें

४	गति	सब
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१०	योग	म ४, व ४, औ १ वै १
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनतानुबधी ४ विना
३	ज्ञान	मिश्रज्ञान
१	संयम	असयम
३	दर्शन	केवल विना
६	लेश्या	सब
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	मिश्रसम्यक्त्व

१	सैनी	सैना,
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	मिश्र
१	जीवसमास	सना, पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
८	सज्ञा	सत्र
६	उपयोग	मिश्रज्ञान ३, दर्शन ३
०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म १
४३	आस्रव	अ १२, क २१, यो १०
२६	लक्षजानि	मनु देव नारकी पशु
१०८	ल को कुल	„ „ „ „

४	गति	सब
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस [१ विना
१२	योग	आहारक २ औदा मि
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनन्तानुबंधी विना [अ
४	ज्ञान	मत्यादि ४ [द्वितीयोप
६	संयम	परिहारविशुद्धि विना
३	दर्शन	केवलदर्शन विना
६	लेश्या	सब
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	उपशमसम्यक्त्व

१ सैनी	सैना
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
८ गुणस्थान	चौथेमे ११ पयन
१ जीवसमास	सनी पचेंद्री
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ सज्ञा	सब
७ उपयोग	४ ज्ञान, ३ दर्शन
१३ ध्यान	आ४ शुक्ल१ रा४ ध४
४५ आस्रव	अ१२, क२१, यो१२
२६ लक्षजाति	दे म पशु ना
१०८॥ ल०को० कुल	दे म पशु ना

११६ क्षयोपशम सम्यक्त्वमें-

४	गति	सब
१	इंद्रिय	पंचेंद्रा
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	"
२१	कषाय	"
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
६	संयम	सूक्ष्म यथा विना
३	दर्शन	केवलदर्शन विना
६	लेश्या	सब
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	क्षयोपशम

१	संनी	सैना
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
८	गुणस्थान	४।५।६।७
१	जीवसमास	पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
८	सज्ञा	सब
७	उपयोग	ज्ञान ४, ध्यान ३
१२	ध्यान	आर्त ३, राद्र ४, धर्म४ सु१
४८	आस्रव	अ१२ क२१ या १५
२६	लक्षजाति	म मे ना पम

१०८॥ ए की कुल म मे ना

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१५	योग	सब
३	वेद	"
२१	कषाय	अनन्तानुबंधी विना
५	ज्ञान	३ कुज्ञान विना
७	संयम	सब
४	दर्शन	"
६	लेश्या	"
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	क्षायिक

१	सैनी	सैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
११	गुणस्थान	४।१४ पयन
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सव
१०	प्राण	सव
४	संज्ञा	सव
०	उपयोग	सुज्ञान ५, दर्शन ४
१६	ध्यान	सव
४८	आस्रव	अ१२ क२१ योग१५
२६	लक्ष जाति	दे म ना प पशु
१०८॥	ल०को० कुल	,, ,, ,,

४ गति	सब
१ इद्रिय	पचेन्द्री
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान विना
७ सयम	सब
३ दर्शन	केवलदर्शन विना
६ लेश्या	सब
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्यक्त्व	सब

१	सैनी	सनी
२	आहारक	अहारक, अनाहारक
१२	गुणस्थान	१२ पर्यंत
१	जीवसमास	सनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	,,
८	सज्ञा	,,
१०	उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१४	ध्यान	शुक्ल २ विना
५७	आस्रव	सब
२६	लक्षजाति	द म ना प पशु
१०८॥	ल को कुल	,, ,, ,, , ,,

असज्ञीमें—

१ गति	तिर्यच
५ इंद्रिय	सब
६ काय	सब
४ योग	औ २, का १, अनु वच १
३ वेद	सब
२५ कषाय	”
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुति
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
४ लेश्या	कृष्ण, नील, कापो, पीत
२ भव्य	भव्य, अभव्य
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व सम्यक्त्व

२४ स्थान

१	सैनी	असैनी
२	आहारक	सब
१	गुणस्थान	मिथ्यात
१८	जीवसमास	सैनापचेंद्री विना
५	पर्याप्ति	मन विना
९	प्राण	,, ,,
४	सज्ञा	सब
४	उपयोग	कुज्ञान२, दर्शन २
८	ध्यान	आ० ४, रौ० ४
४६	आस्रव	मि५, अ१७, क२५, यो४
६२	लक्षजानि	असैनी तिर्यंच
१३४॥	लक्षकोटिकुल	,, ,,

४	गति	सब
५	इंद्रिय	,,
६	काय	,,
१४	योग	कार्माण बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	सब
८	ज्ञान	सब
७	संयम	सब
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	,,
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सब

२ सैनी — सैनी, असैनी।

१ आहारक — आहारक

१४ गुणस्थान — १२ पर्यंत

१९ जीवसमास — सब

६ पर्याप्ति — ,,

१० प्राण — ,,

४ संज्ञा — ,,

१२ उपयोग — ,,

१५ ध्यान — अन्तका शुक्ल बिना

५६ आस्रव — कार्माण बिना

८४ लाख योनि — सब

४	गति	सब
५	इन्द्रिय	,,
६	काय	,,
१	योग	कार्मा–
३	वेद	सब
२५	कषाय	,,
६	ज्ञान	विभंग, मन पर्याय विना
२	संयम	असयम, यथाख्यात
४	दर्शन	सब
६	लेश्या	,,
२	भव्य	भव्य, अभव्य
५	सम्यक्त्व–	मिश्र विना

२	सैनी	सैनी, असैनी
१	आहारक	अनाहारक
५	गुणस्थान	१।२।४।१३।१४
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	सब
७	प्राण	मन, वचन, श्वास बिना
४	सज्ञा	सब
१०	उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
१०	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म १ शु१
४३	आस्रव	मि५ अ१२ क२५ या१
८४	लक्षजाति	सब
१०९॥	ल०कौ०कुल	"

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	"
६ काय	"
१३ योग	आहारक २ विना
३ वेद	सब
२५ कषाय	"
३ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्य	भव्य, अभव्य
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्वसम्यक्त्व

२	संनी	संनी, असंनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	मिथ्यात्व
१९	जीवसमास	सब
६	पर्याप्ति	,,
१०	प्राण	,,
४	सज्ञा	,,
५	उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आ ४, रौ ४
५५	आस्रव	आहारक २ बि
८४	लक्ष जानि	सब
१९९॥	लक्षकोटि कुल	,,

४	गति	सब
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस काय
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२५	कषाय	„
३	ज्ञान	कुज्ञान ३
१	सयम	असयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेश्या	सब
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	सासादन

१	सैनी	सैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	सासादन
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सज्ञा	सब
७	उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८	ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५०	आस्रव	अ१२ क२५ यो १३
२६	लक्षजाति	सब पचेंद्री
१०८॥	लक्ष कोड़ कुल	,, ,,

मिश्र-गुणस्थानमे-

४	गति	सब
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
१०	योग	मन४ वच४ औदा१ वै १
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनतानुबधी ४ बिना
३	ज्ञान	सुज्ञान-कुज्ञान मिश्र
१	संयम	असयम
२	दर्शन	अवधि, केवल बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	मिश्रसम्यक्त्व

१३४ अविरतसम्यक्-गुणस्थानमें–

४	गति	सब
१	इन्द्रिय	पंचेंद्री
१	काय	त्रस
१३	योग	आहारक २ बिना
३	वेद	सब
२१	कषाय	अनंतानुबंधी ४ बिना
३	ज्ञान	सुज्ञान ३
१	संयम	असंयम
३	दर्शन	केवल बिना
६	लेश्या	सब
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	अविरति
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१०	ध्यान	आर्त ४, रौ ४, ध २
४६	आस्रव	अ १२ क २१ योग १३
२६	लक्ष जाति	सब पचेंद्री
१०८॥	ल० को० कुल	" "

 देशव्रत गुणस्थानमें—

२	गति	पशु मनुष्य
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म ४, व ४, औ १
३	वेद	सत्र
१७	कषाय	अन ४ अप्र ४ विना
३	ज्ञान	सुज्ञान ३
१	संयम	संयमासंयम
३	दर्शन	केवलदर्शन विना
३	लेश्या	पीत पद्म, शुक्ल
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१	गति	मनुष्य
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
११	योग	म ४ व ४ औ१ आहा २
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भावभेद ३
१३	कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
३	संयम	सामा , छेदो , परि
३	दर्शन	केवल विना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	प्रमत्त
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	सब
७	उपयोग	४ ज्ञान, ३ दर्शन
७	ध्यान	आ ३, धर्म ४
२४	आस्रव	कषाय १३, योग ११
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल०को० कुल	„

प्रमत्त-गुणस्थानमे-

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
११	योग	म ४ व ४ औ१ आहा २
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भाववेद ३
१३	कषाय	सज्वलन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
३	संयम	सामा , छेदो , परि
३	दर्शन	केवल विना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	प्रमत्त
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	मन
१०	प्राण	सब
४	संज्ञा	मन
७	उपयोग	४ ज्ञान, ३ दर्शन
७	ध्यान	आ ३, धर्म ४
२४	आस्रव	कषाय १३, योग ११
१४	एकजाति	मनुष्य
१४	ल०को० कुल	„

१४० अप्रमत्त-गुणस्थानम्-

१	गति	मनुष्य
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म ४, व ४, औ १
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भावभेद ३
१३	कषाय	स ज्वलन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
३	सयम	सामा छेदो परि.
३	दर्शन	केवल विना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व-	उपशम, वेदक, क्षायिक

१४२ अपूर्वकरण-गुणस्थानमे –

१	गति	मनुष्य
१	इद्रिय	पचद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म ४ व ४ औ १
३	वेद	द्रव्य पुरुष, भाववेद ३
१३	कषाय	सज्व ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
२	सयम	सामा १ छेदा १
३	दर्शन	केवल विना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	भव्य
२	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक

१ सैनी	सैनी
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	अपूर्वकरण
१ जीवसमास	सैनी पंचेंद्री
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	"
३ सज्ञा	[illegible] बिना
७ उपयोग	[illegible] ४, ज्ञान ३
१ ध्यान	[illegible] विचार
२२ आस्रव	क. ११, [illegible] ९
१४ लक्षजाति	[illegible]
१४ लक्षकोटिकुल	[illegible]

१४४ अनिवृत्तिकरण-गुणस्थानमें-

१	गति	मनुष्य
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म ४, व ४ औदा १
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भाववेद ३
७	कषाय	संज्वलन ४, वेद ३
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
२	संयम	सा १, छे १
३	दर्शन	केवल विना
१	लेश्या	शुक्र
१	भव्य	भव्य
२	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक

१	सैनी	सैनी,
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण
१	जीवसमास	सैनी, पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
२	संज्ञा	मैथुन, परिग्रह
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	प्रथक्तवितर्कवीचार
१६	आस्रव	कषाय ७, योग ९
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुल	,,

 सूक्ष्मसांपराय-गुणस्थानमें-

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेन्द्री
१	काय	त्रस
०	योग	म ४, व ४, औदा १
०	वेद	०
१	कषाय	संज्वलन (सूक्ष्म) लोभ
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
१	संयम	सूक्ष्मसांपराय
३	दर्शन	केवलदर्शन विना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	भव्य
२	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	सूक्ष्मसांपराय
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	सव
१०	प्राण	„
१	संज्ञा	परिग्रह (सूक्ष्मलोभ)
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	पृथक्त्ववितर्कवीचार
१०	आस्रव	कषाय १, योग ९
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुल	„

११८ उपशातकषय-गुणस्थानमें-

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म ४, व ४, ओ १
०	वेद	०
०	कषाय	०
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
१	संयम	यथाख्यात
३	दर्शन	केवल विना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	भव्य
२	सम्यक्त्व-	उपशम, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	उपशातकषाय
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री
६	पर्याप्ति	मन
१०	प्राण	मन
०	सज्ञा	०
७	उपयोग	४ ज्ञान, ३ दर्शन
१	ध्यान	पृथक्तवितर्कवीचार
९	आस्रव	योग ९
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुल	„

१	गति	मनुष्य
१	इंद्रिय	पचेंद्री
१	काय	त्रस
९	योग	म ४ व ४ औ १
०	वेद	०
०	कषाय	\०
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
१	संयम	यथाख्यान
३	दर्शन	केवल्द विना
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	क्षायिक

१	संनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	क्षीणकषाय
१	जीवसमास	सैनी पचद्री
६	पर्याप्ति	मन
१०	प्राण	"
०	संज्ञा	०
७	उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१	ध्यान	एकत्ववितर्क अवीचार
९	आस्रव	योग ९
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	लक्षकोटिकुल	"

 सयोगकेवली गुणस्थानमें—

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेन्द्री
१	काय	त्रस
७	योग	सत्यमनवच २, अनुभय २
०	वेद	औदारिक २, कार्माण १
०	कषाय	०
१	ज्ञान	केवलज्ञान
१	संयम	यथाख्यात
१	दर्शन	केवलदर्शन
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	क्षायिक

०	सैनी	०
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
१	गुणस्थान	सयोगकेवली [भेदे
१	जीवसमास	सैनी पर्याप्ती [द्रव्य मन-
६	पर्याप्ति	सब
४	प्राण	वच, काय, श्वास, आयु
०	संज्ञा	०
२	उपयोग	केवलज्ञान, केवलदर्शन
१	ध्यान	सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति
७	आस्रव	योग ७
१४	लक्ष जाति	मनुष्य
१४	लक्षकोटि कुल	,,

 अयोगकेवली गुणस्थानमे-

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचेन्द्री
१	काय	त्रस
०	योग	०
०	वेद	०
०	कषाय	०
१	ज्ञान	केवलज्ञान
१	संयम	यथाख्यात
१	दर्शन	केवलदर्शन
०	लेश्या	०
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	क्षायिक

०	सैनी	०
१	आहारक	अनाहारक
१	गुणस्थान	अयोगकेवली
१	जीवसमास	सैनी पचेंद्री (द्रव्य-मन अपे-
६	पर्याप्ति	सब
१	प्राण	आयु
०	संज्ञा	०
२	उपयोग	केवलज्ञान, केवलदर्शन
१	ध्यान	व्युपरतक्रिया निवृत्ति
०	आस्रव	०
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल० को कुल	,,

॥ समाप्त ॥



चौबीस–ठाना

दोहा।

देव धर्म-गुरु-प्रणमों, वन्दों मन वच काय।
गुणठाणा पर धरसि, रचना कहों बनाय ॥ १ ॥

सवया इकतीसा।

गति चार, इन्द्री पाँच, काय षट योग पन्द्रै,
वेद तीन, चौ कषाय, ज्ञान आठ धारे है।
संयम सात, दृग चार, लेश्या षट, भव्य दोय,
सैनी दोय सम्यक छै, दोय हार धारे हैं ॥
गुण चौदा, जीव चौदा, प्रजा षट, प्राण दश,
प्रत्यय सत्तावन, उपयोग भेद बारे है।
ध्यान सोलै, सना चार, जाति लाख चउरासी,
आश्रव कुल दाम लाख कोडि धारे हैं ॥ २ ॥

चौपाई।

पहिलेतें चतुर्गत गति चार, पंचममें नर पशू विचार।
छट्ठे चौदम लग कही, मानुष गति इक जानों सही ॥ ३ ॥
इन्द्री पांचों हैं मिथ्यात दूजेतें चौदम लग जात।
इक पंचेन्द्री जिनवर कही इम इन्द्रिय वर्णन वरणई ॥ ४ ॥
पहिले गुण षट् काय जु धर्म, दूजेतें चौदम त्रस वर्म।
पहिले दूजे तेरह योग हारक द्विक बिन जान नियोग ॥ ५ ॥
तीजेमें दस इमि जिन गाय मन वच चहु औदारिक काय।
वैक्रीयक मिल सब दस भये, चौथे त्रयोदश परि ने कहे ॥ ६ ॥
पंचममें मन वच वसु जान, और औदारिक मिल नव ठान।
प्रमत्तमें एकादश योग हारक द्विक दुस जान नियोग ॥ ७ ॥

सप्तमतैं बारम गुणथान, नव परमवर ज्ञान सुगार ।
तेरम जोग सप्त निरधार, अनुभय-सत्य, वचन मन चार ॥८॥
औदारिक आदारिक मिश्र कार्माण मिल सप्त जु विश्र ।
चौदम जोग भये सब क्षीण ये जोगनकी विधि परवीण ॥९॥
वेद प्रथमतैं नव गुण तीन, आगे वेद न जान प्रवीण ।
अब कषायको वर्णन करो गुण ठाणा भिन भिन उच्चरो ॥१ ॥

छप्पय ।

पहिले दूजे सर्व मिश्र इकवीस अनील ।
चौथेहू इकवीस चौकडी प्रथम न लीजे ॥
अप्रत्याख्यानी बिना, दश सप्तम सतरा ।
प्रत्याख्यानी बिना, तेर षट् सत वसु द्वारा ॥

नौवें गुण सत भाव हैं, भज्ज्वा भय वेद मन ।
दसवें सूक्षम लोभ इक आगे हीन रगाय गन ॥११॥
प्रथम तृतिय कुज्ञान, तीन तीजे सु मिश्र भन ।
चौथे तीन सुज्ञान, पांचमें भी नहि गन ॥
षष्ठें द्वादश तहँ ज्ञान केवल बिन चारों ।
तेरम-चौदम गुण-स्थान केवल इक धारों ॥
इहि विधि गुण पर ज्ञानको कथन कहो जगदीशने ।
अब संयम रचना कहूं, जिमि सूत्र भाषी ईशने ॥१ ॥
पहिलेतें चतु ठौं असंयम ही इक जानो ।
पंचम संयम-देश छठे संयम दस मानो ॥

सामायिक छेदोपस्थाप, परिहारविशुद्ध ।
अष्टम-नव गुण होय, नाहिं परिहारविशुद्धी ॥
सांपराय-सूक्षम दश ग्यारमतें जु अयोग तक ।
इक यथाख्यात ही जानिये ये संयम गुणठान अधिक ॥ १३ ॥

पहिले दूजे होय, चक्षु-अचक्षु भना रे ।
अयतें बारम लईं अवधियुत तीन भनीजे ॥
केवल तेर-चौद और पद केवल जु लग ।
पंचम-षष्टम-सात तीन शुभ लेश्या हर अग ॥
पुनि अप्रमत्तें सयोग तक एक शुक्ल लेश्या कही ।
गुण चौदहें सब नाशिके, पाय सिद्ध पदवी लही ॥ १४ ॥

पहिल भव्य-अभव्य दुतियतें भवि चादम तक।
असंगुणके तो नाम तहाँ नहीं सम्यक् एक॥
चतु पन षट् सत माहिं भाय उपशम अरु वेदक।
अष्टमतें ग्यारम तक दोय उपशम और क्षायिक॥
बारम क्षायिक ही कहीं, मैनी-मतीम मिथ्यातमें।
गुण दुतर्त चौदम तक इक सैनी ही गुणगराम॥ १५॥

सवैया तेईसा।

पहिले दूजे हार-अनाहारक तीन हारक चौथे दोय।
पचमतें बारम लग हारक तेरम हार-अनहारक होय॥
चादम इक अनहार नाम गुण ना चादह इम जोय।
पहिले नाद समाप्त ग्रन्थ है यामें भूल और न कोय॥ ६१॥

पर्याप्ति चौदम लग षट् ही प्राण बारमें लग दश जान ।
तेरम वच-तन-श्वास-आयु चतु चौदम एक आयु पहिचान ॥
संज्ञा कहियत षट लग चारों सप्त अष्ट नव हार न ठान ।
धर्म मथुन परिग्रह दोनों, दसमें परिग्रह आगे हान ॥ १७ ॥

छप्पय ।

पहिले-दूजे दर्श दोय कुज्ञान तीन हैं ।
मिश्र माहिं त्रय दर्श, ज्ञान पुनि मिश्र तीन हैं ॥
चतु पन षट् विज्ञान, तीन शुभ रूप बखानो ।
सप्तमें द्वादश लहैं, सत मनपर्यय जानो ॥
तेरम चौदम दोय हैं केवल दर्शन-ज्ञान युत ।
इम षटद्रव्य वर्णन करैं जिनागम अनुसारयुत ॥ १८ ॥

पहिले-दूजे गट अस इकक जोइ।
मिथ माहिं नव नान, धर्मका एक मिलेई ॥
पुनि इरक दुर भद मिलैं, दस चतु गुण ठानौ।
पचम भय कृष गिलें, इकादस गव पहिचाना ॥
षट् थ रा भय यमें चक, ता च स्याल गा तुक्त।
पारम तेरम पुनि चौदमें, इमर्में गर्व जिन गुरू ॥१९॥
पहिले पत्पन कहे, थहारह जिन बिन जाना।
पच मिथ्यात तु रिना, सहित षचार चरानो ॥
ध्य ज मिश्र तु नाहिं हीन त्यागीत चलाना।
अमताकृण जिहैं नाम चतुम च गीन ठह नानो ॥

जोग काय तु पूर्ववत्, अनत ग्यारह पंचमें ।
चौबीस जोग नय यके प्रमत्त गिनिये सत्तमें ॥२ ॥
सप्तम अष्टम गुण,—स्थान व ईस तु आस्रव ।
नव में तेरह ग्ये दशम दश ग्यारम में नव ।
बारम हि नव जान तेरम सप्त गनीजे ।
मन वचक दुय दाय, औदारिक युगल गु जै जे ॥
बारसाण मिश्र सप्त य तेरम तु यमें जानिये ।
पुनि चौदमनें आस्रव नहिं यह मन वच उर गनिये ॥२१॥
चौरासी लख योनि प्रथम गुण ठाने सारी ।
दूजेतें चौ तईं लख छब्बीस बिचारी ॥

पचमम नर पशु गग अठारह जानो ।
पहुँते चौदह तइ, मनुष लख चौदह ठनो ॥
कुलकोटि प्रथममें जान सब दूजैंतें चतुलग चऊ ।
पंचम नर पशु सकल गन, आगे मानुष जान सऊ ॥२२॥

दोहा ।

ये सब रचना पर तना यामें तू नहिं जीव ।
तेरा दर्शन ज्ञान गुण तामें रहो सदीव ॥२३॥

ॐ

चौवीस दण्डक ।

गाथा—

वन्दों वीर सुधीरको महावीर गंभीर ।
[illegible] ॥१॥
[illegible]
[illegible] ॥२॥
[illegible]
[illegible] ॥३॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

चाबीसों दंडकनमें व्यापति गुन त्थ।
सुन्दर निरखत भाव धरि चहुंगति पानी देव ॥६॥

चौपई—

पहिले दडक नारक तणा, भवनवासी दस दंडक भना।
ज्योतिष व्यंतर सुरगति धाम थावर पंच महादुखधाम ॥७॥
विकलत्रय त्रि नर तिर्यंच, पंचेन्द्रिय भाव्य परपंच।
ये चौबीसों दंडक कहे सब गुन इनमें भर जु रहे ॥८॥
नारकीय गति- गामि दाय नर तिर्यंच पंच सब होय।
नाय अगनी पहिला ज्या, मन जिन दिश परम न पा ॥
[illegible] लग नहिं [illegible] सुख नाहिं।
सर्व नाव [illegible] सही, नाहर पचम गा नाहिं ॥१०॥

नारी छठे लग ही जाय नर अरु मच्छ सातवें थाय।
ये तो नरक तनी गति जान, अब आगति भाखी भगवान ॥११॥
नरक मांहीं से आवे जीव, पहुंचत ही गर्भज दो जीव।
चार नारकी पद [illegible] पावे नर पद [illegible] ॥१२॥
छठे का निकसा तु लगाय, समकती होवे निष्पाप।
पंचमे निकसा मुनि होय [illegible] ॥१३॥
[illegible] निकसा [illegible] तीर्थंकर हु [illegible] पाय।
[illegible] भाखा जिनवाणी में सार ॥१४॥
[illegible] दिख [illegible] ॥
[illegible] नहीं [illegible] ॥१५॥

दव मर गति पच लहाय भू जग, नहार नर, पशु थाय।
दूने सुरग, उपरके देव थावर ह न कहैं जिनदेव ॥१६॥
सहस्रारलें ऊँच मरा मरकर ह वें निश्चय नरा।
नर पशु भोगभूमिके होय दूजे सुर। पर नहि होय ॥१७॥
नाय नहीं यह निश्चय कही, देवनि भोगभूमि नाह गही।
करमभूमिया नर अरु ढोर इन बिन भोगभूमि नहिं और।१८॥
नाहिं न तान आगाने होय गति इनको देवनकी होय।
कर्मभूमिया तिर्यग तास धारक्षत धरि आरम नाश ॥१९॥
सहस्र र ऊपर तिर्यच नाहिं नहीं पे गति परकार।
असत सम्यग्दृष्टि नरनाथ चारमल ऊपर नहिं नाय ॥२०॥

अप्रमती पचासी साध भवननिकर्ते जाय न बाध ।
परिव्राजक दण्डी हैं जेह परम पदे ताहि उपजह ॥ [illegible] ॥
परमहंस न मा परमती [illegible] ऊपर नहिं गति ।
[illegible] परमत मांहि, [illegible] नहिं कहीं [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] अनुमत [illegible] अहुरि [illegible] अधिकार ।
[illegible] पदे [illegible] जिनराय ॥ [illegible] ॥
इत्यादिक भारी [illegible] मांहि नहिं गती ।
[illegible] परिग्रह होय, [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] नाहिं और न परा ।
[illegible] नाहीं [illegible] ॥ [illegible] ॥

इन्द्र हुआ न शची हू भयो लोकपाल कबहू नहिं पयो ।
लौकान्तिक हुआ न धारि, अनुत्तर वह पहुंचा न पधारे ॥२६॥
चन्द्र धरि बहु पद नहिं धर अब सम्यक मुक्ति हि वर ।
इ विमान [illegible] तातें उचो भव जु रिद्धि ॥ ७॥

ताके ऊपर है सिद्धलोक, पर अन[illegible]न अ [illegible] ।
[illegible] आम ते [illegible] मनी [illegible] ॥२८॥

चौबीसों दण्डके माहिं मनुष जाय यामें शक नाहिं ।
मुनि हु पावे मनुष सुजान, सकल [illegible] अवनीश ॥२९॥
मुनि बिन मोक्ष न पावे और मनुष बिना नहिं मुनि ते ठौर ।
सम्यक्तो ते मुनिवर, [illegible] तौ [illegible] ॥३०॥

तहां जाय अविनश्वर होय फिर जामैं आवे नाहिं सोय।
रहैं सासते आतम माहिं, आतमराम भय शंक नाहिं ॥२१॥

गति प्रधान कही नरतनी, आगति पुनि बाईस हि भनी।
तेजकाय अरु वात जु काय, नर बिन और सबै नर थाय ॥२ ॥

गति पचीस आगति बाईस, मनुषतनी भाखी जगदीश।
ता ईश्वरराम आतमरूप, ध्यावे चिदानन्द चिद्रूप ॥२३॥

सो उतरे भवसागर भया, और न काऊ शिवपुर गया।
ये सामान्य मनुषकी कही, अब सुनि पदवी धरकी सही ॥२४॥

तीर्थंकरकी आगति दोय सुर नारकतैं अब राय।
फेर न गति धारे जगदीश, जाय विराजे जगके शीश ॥२५॥

चनी ज नाथ या र्गी स्वर्गेश्वनें और चनी ।
दनवी गाति एव हि कही, अर मुनिय नागति जु सार ॥३६॥

चशा गति तीन बखान रव नरक भर मोग गुशान ।
व चार ला गुर गेर नाय, मद राजने नरक भाव ॥३७॥
अमिर पार पद लिण, दरसीगर व पुण्य प्रमान ।
चमभर की जागा गुरग नाय ६ ६, शिवाला ॥३८॥

तप धार ये निश्च भाय मुनि पाय मुभा में भाय ।
उपनग्निबो एन ६ भेद नाग नवमें उहे जु सद ॥३९॥
रत नाहिं यह निश्चय मद, सहज मुनि पथ नाहिं धरे ।
नाधर नारें पद निश्च पन्था नरक पै गुनान ॥४०॥

नारक आगति सुरगति जान गति नरकनकी कही बखान।
जालिर पावें पद तिथंकर पुण्य शलाका शिव के थोक ॥४१॥
य पद पाय सु नारक जीव अपकागमें क जगपीव।
गार हु पद कहै गह पुन्कर नारक हू नाहै एह ॥४२॥
इन्द्र भये न मदा हू नय नियगर, नात मात नहिं भये।
ये पद पाय हने नाहिं जीव धारे दिनमें है दिवाकर ॥४३॥
नकी आगति धुनर्त नान गमाति शति हू जु बखान।
पुन्कर दृपक्षेर ही नाय गन्न मदन हरि ऊरध नाय ॥४४॥
नारक ह्ह अधोगति जाय, नन्ह कन्न महादुःखद य।
नानातर पावें निर्वाण, व पुरुष ये सूत्र प्रमाण ॥४५॥

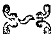
तीर्थंकरके पिता प्रसिद्ध स्वर्ग जायं होवें सिद्ध ।
माता स्वर्गलोक ही जाय, नाखिर पितृसुत नरक रहाय ॥४६॥
ये सब रीति मनुष्यकी कही अब गति तिर्यंच तनी सही ।
पचेंद्री पशु मरण कराय चार गति उत्पन्न थाय ॥४७॥
चारबीसों दण्डकमें मर पशू होय तौ न हानि पर ।
गति आगति वरणी चौबीस, पचेंद्री पशु की जगदीश ॥४८॥
ता परमेश्वरने पथ गहा चारबीसों दण्डकमें कहा ।
विकलत्रयकी दस ही गनो, इस आगति भाषी जिनवर ॥४९॥
थावर पंच विकलत्रय तीन नर तिर्यंच पचेंद्री लीन ।
इन ही दसमें उपजे आय इनहीतें तिनमांहि थाय ॥५०॥

न रक बिन [illegible] आय [illegible] बारा [illegible] गोन ।
तेरे बानु सहि [illegible] मनुष होय नहिं सूक्ष प्रमान ॥५१॥
[illegible] बिकलत्रय [illegible] भाखी म मोर ।
[illegible] आत [illegible] गाँव निरधार ॥५२॥
य [illegible] कर, [illegible] परमपद लहै ।
[illegible] तीन त्रिभुवन पीव ॥५३॥
जीव [illegible] न भेद, [illegible] ।
[illegible] कर्म होय [illegible] ॥५४॥

दोहा—

[illegible] जोग [illegible] परसाद [illegible] ।
[illegible] भ्रमण दूर हो जाय ॥५५॥

जिन बिन गति बहुते धरी भयो नहीं उपकार ॥
जिन मारग उर धारिके लहिये भवदधि पार ॥५६॥
जिन भज सब परपंच तज बड़ी बात है यह ।
पंच महाव्रत धारिके भवसों जल दह ॥५७॥
अंत करण जु शुद्ध है निजधरमी आतमराम ।
सदा भविजन करण, भाषी दौलतराम ॥५८॥



प्रिय पाठक महाशय !

इस ग्रन्थ की अशुद्धियाँ, पूर्व संस्करण की तो हमने शुद्ध कर दी हैं। किन्तु वर्तमान संस्करण में प्रूफ संशोधक की असावधानी से जो कुछ रह गई हैं, उसको शुद्धाशुद्धी पत्र से शुद्ध कर पढ़ें।

शुद्धाशुद्धी पत्र

पृ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
२०	५	औ का औ मि (कार्माण)	औ औ मि कार्माण
३२	१०	दशन	दर्शन
३४	१	सत्य व उभय	असत्य व उभय
५५	१२	८० लक्ष जाति	८४ लक्ष जाति
५६	१२	२ भव्य अभव्य	१ भव्य

५९	१८	१० ल फी फुल	५७॥ त था फु
६४	१३	५ सम्यक्त्व	६ सम्यक्त्व
७४	१७	२ भव्य	१ भव्य
७६	७	म ४ व औ० गाहारक	म ४ व ० आ ४ फामाण १
८०	६	तुपत	पुग्ग
८१	९	८ उपयोग	७ उपयोग
८८	१३	सम्यक्त्व	६ सम्यक्त्व
९०	५	१० योग	११ योग
१११	१०	ज्ञान	आ
५८	१२	२ भव्य	१ भव्य

सूचना

हमारे यहांसे छपेहुए ग्रन्थ–

अनुभवप्रकाश	१)
भावदीपिका	२)
चौबीसठाणा चर्चा	।।।)

नोट,–उपरोक्त ग्रंथ वाचनालय, जिनालय आदि संस्थाओं को तथा परिग्रह त्यागी श्रावक और साधुओं को बिना मूल्य–मात्र पोष्ट–खर्च में भेजे जावेंगे।

मिलनेका पता –

दि. जैन उदासीनाश्रम

तुकोगंज, इन्दौर

मूल्य से—

उपरोक्त ग्रन्थ—

निम्न पते से भी मिलेंगे।

दिगम्बर जैन पुस्तकालय

गांधीचौक, मेरठ

जैन-साहित्य प्रसारक कार्यालय

हरदा (मध्यप्रांत)
